रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

अनेक-भाषी राज्यरचना और अेकता

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ५०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ११ फरवरी, १९५६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

'हे नम्रताके सागर!'

हे नम्रताके सागर!
दीन भंगीकी हीन कुटियाके निवासी!
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्राके जलोंसे सिंचित
अिस सुन्दर देशमें
तुझे सब जगह खोजनेमें हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे;
तेरी अपनी नम्रता दे;
हिन्दुस्तानकी जनतासे
अेकरूप होनेकी शक्ति और अुत्कंठा दे।
हे भगवन्!
तू तभी मददके लिअे आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे
कि सेवक और मित्रके नाते
जिस जनताकी हम सेवा करना चाहते हैं,
अुससे कभी अलग न पड़ जायं।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रताकी मूर्ति बना,
ताकि अिस देशको हम ज्यादा समझें,
और ज्यादा चाहें।

वर्धा, १२-९-'३४ मो० क० गांधी
(अंग्रेजीसे)

बड़ोदा युनिवर्सिटी

बड़ोदा युनिवर्सिटीका अेक विद्यार्थी अुसकी शिक्षा और परीक्षाके माध्यमकी आलोचना करनेवाला पत्र लिखकर वहांके व्यवस्था-तंत्रके खिलाफ अेक शिकायत करता है। पत्रकी भाषा कड़ी कही जायगी। वह शायद युनिवर्सिटीमें जो कुछ चल रहा है अुसके कारण अुस भाअीको आये गुस्सेका परिणाम मानी जा सकती है। अुस भागको छोड़कर नीचे विद्यार्थीके ही शब्दोंमें अुसकी शिकायत देता हूं:

"बड़ोदा युनिवर्सिटीमें भी युनिवर्सिटीके प्राथमिक वर्गों (preparatory classes) में अध्यापकों और विद्यार्थियोंको शिक्षा और परीक्षाके माध्यमके रूपमें अंग्रेजी, हिन्दी या गुजरातीको अपनानेकी छूट दी गअी थी। अिसके फलस्वरूप ८० प्रतिशत विद्यार्थियोंने स्वभावतः मातृभाषामें लिखना ही पसन्द किया। यह नीति स्नातक-वर्गों तक अपनानेका सीनेटका निश्चय था। परंतु युनिवर्सिटीके सत्ताधारियोंके रुखमें अेकाअेक परिवर्तन हो गया है। अुन्होंने अैसा निर्णय किया है कि विद्यार्थियोंको मातृभाषामें लिखनेकी छूट नहीं दी जाय। अतः विद्यार्थियोंका मातृभाषामें शिक्षा पानेका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जायगा। अिस तरह बड़ोदा युनिवर्सिटीका माध्यम मातृभाषा नहीं, परंतु हिन्दी बनेगी।"

क्या अूपर बताअी यह बात सच है कि युनिवर्सिटीकी नीति बदली है? और क्या अब हिन्दीको माध्यम बनानेका निर्णय किया गया है? या विद्यार्थीने वहांके अधिकारियोंमें चलनेवाली अफवाह परसे अनुमान करके यह लिखा है? और अध्यापक अपने शिक्षण-कार्यमें वैकल्पिक माध्यमकी छूटका लाभ अुठाते हैं या अभी भी अंग्रेजीका ही अुपयोग करते रहते हैं? अिस संबंधमें युनिवर्सिटीको गुजरातकी जनताके सामने सच्ची हकीकत पेश करनी चाहिये। सीनेटको अिस विषयमें समय पर खुली चर्चा करनी चाहिये।

यह बात तो हमारे जाननेमें आअी थी कि बड़ोदा युनिवर्सिटीके बड़ी संख्याके विद्यार्थियोंने प्रथम वर्षकी परीक्षा गुजरातीमें दी और अुसका बहुत अच्छा नतीजा आया। वहांके अध्यापकोंसे भी मालूम हुआ कि विद्याके विकासकी दृष्टिसे भी माध्यम बदलनेका यह प्रयोग सफल रहा। युनिवर्सिटीको अिस विषयमें भी अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करनी चाहिये। खास करके अिसलिअे कि अुसके बिना यह समझमें नहीं आ सकता कि माध्यम-परिवर्तनका विचार अगर बदला गया हो तो क्यों बदला गया।

अन्तमें, हिन्दी माध्यमके अुल्लेखका विचार करें। अिसके पहले अिस प्रश्न पर काफी चर्चा हो चुकी है, अिसलिअे फिरसे लंबी चर्चामें यहां अुतरनेकी जरूरत नहीं है। आन्तर-भाषा हिन्दीकी कल्पना शिक्षाके माध्यमके रूपमें कभी भी नहीं की गअी। फिर भी अगर अैसा किया गया तो हिन्दी भाषाको स्वीकार करनेमें भी अहिन्दी प्रदेश हिचकिचायेंगे। यह वस्तु अब दीये जैसी स्पष्ट हो जानी चाहिये। राज्योंकी पुनर्रचना संबंधी अनुभव भी यही बात साबित करते हैं। भारतकी अेकताके लिअे सब जगह हिन्दीकी अनिवार्य पढ़ाअी शुरू होनी चाहिये। यह अुस अेकताकी कसौटी है। बड़ोदा युनिवर्सिटी क्या अुस पर खरी अुतरती है? वहां हिन्दीका अध्ययन अनिवार्य रूपमें शुरू हुआ है?

अन्तमें माध्यमके बारेमें अेक गलतफहमी, जो बहुत जगह देखनेमें आती है, मैं दूर कर देना चाहता हूं। बहुत लोग अैसा मान कर चलते हैं कि प्रदेशभाषा ही माध्यम बनाअी जाती है। यह खयाल गलत है। गुजरात युनिवर्सिटीने गुजरातीके साथ हिन्दीको भी माध्यम माना है, क्योंकि सिद्धान्त यह है कि अहिन्दी प्रदेशोंवाली भारतीय युनिवर्सिटियां द्विभाषी होंगी। मुख्यतः और सामान्य रूपमें अुनका माध्यम प्रदेशभाषा होगी। परन्तु प्रदेशके बाहरके विद्यार्थी तथा अध्यापक राष्ट्रकी आन्तर-भाषा हिन्दीका माध्यमके तौर पर अुपयोग कर सकेंगे। आन्तर-भाषा अिस तरहकी जरूरत पूरी करनेके लिअे ही है। आन्तर-युनिवर्सिटी व्यवहार भी हिन्दीमें होगा। अभी तक अैसा नहीं होता, यह अिन संस्थाओंका

www.vinoba.in

दकियानूसीपन ही जाहिर करता है। अंग्रेजीसे चिपटे रहनेमें तो विद्या-विकासके संबंधमें भी गलती हो रही है। यह अिन संस्थाओंकी अक्षम्य शिथिलताको बताता है।

३१–१–'५६ मगनभाई देसाई
(गुजरातीसे)

तामिलनाड़के स्कूलोंमें हिन्दी

लोगोंकी यह आम मांग है कि हिन्दीको स्कूलके पाठ्यक्रमका अभिन्न अंग बना दिया जाय। अिस समय मद्रास राज्यके स्कूलोंमें कक्षा १ से कक्षा ६ तक हिन्दी दस्तकारीके विकल्पके रूपमें पढ़ाओी जाती है और परीक्षामें मिले हुअे नंबरोंका क्लास चढ़ाते समय या युनिवर्सिटी पाठ्यक्रम अथवा सरकारी नौकरीके लिअे भरती करते समय कोओी विचार नहीं किया जाता। अिसलिअे विद्यार्थी हिन्दीके अध्ययनके प्रति अुदासीन रहते हैं और अपना ध्यान अंग्रेजी, गणित, सायन्स, समाजशास्त्र वगैरा जैसे परीक्षाकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर केन्द्रित करते हैं।

त्रावणकोर-कोचीन राज्य और आन्ध्र राज्यमें* हिन्दीमें मिले हुअे नंबरोंका क्लास चढ़ाने या भरती करनेके समय हिसाब लगाया जाता है, तो मद्रास राज्य अपने पड़ोसी-राज्योंमें प्रचलित पद्धतिका अनुकरण क्यों न करे? तामिल विद्यार्थी हिन्दीके ज्ञानसे अपनेको सुसज्ज करनेमें पीछे क्यों रहें? अथवा मद्रास सरकार हिन्दीके अध्ययनको प्रोत्साहन देनेके लिअे अुन विद्यार्थियोंको १५ रुपयेका (अेस० अेस० अेल० सी० परीक्षाकी फीस) अिनाम दे सकती है, जो अेस० अेस० अेल० सी० परीक्षामें हिन्दीमें — जो स्कूलोंमें सीखी जानेवाली तीसरी भाषा है — ५० प्रतिशत या अिससे अूपर नंबर हासिल करें। यह अतिरिक्त खर्च, मान लीजिये १०,००० रुपये, मद्रास राज्य केन्द्रीय सरकारसे अहिन्दी-भाषी प्रदेशोंमें हिन्दीका प्रचार करनेके लिअे विशेष ग्रान्टके रूपमें ले सकता है। अिस कदमसे स्कूलोंमें हिन्दीके अध्ययनको बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा।

हिन्दी प्रचार सभा क्वार्टर्स, अेस० आर० शास्त्री
तेन्नुर, तिरुच्चिरापल्ली, मद्रास
३१–१–'५६

[मैं श्री शास्त्रीके सुझावसे सहमत हूं। मेरा तो यह विचार है कि हिन्दीको हमारे देशके सारे अहिन्दी-भाषी प्रदेशोंके स्कूलोंमें अध्ययनका अनिवार्य विषय बना देना चाहिये। नये भारतमें हिन्दी **तीसरी** नहीं परंतु **दूसरी** भाषा रहेगी, पहली भाषा प्रदेश-भाषा होगी। प्रदेश-भाषा अपने प्रदेशके निश्चित क्षेत्रमें चलेगी, अर्थात् अुस प्रदेशका सारा राजकाज और शिक्षण अुस भाषाके जरिये चलेगा। नओी रचनामें हिन्दी आन्तर-भाषाके रूपमें — आन्तर-राज्य और भारतीय संघकी व्यावहारिक भाषाके रूपमें — प्रदेश-भाषाकी पूरकका काम करेगी। अिस तरह विचार करने पर भाषाकी समस्या अिस रूपमें स्पष्ट हो जाती है कि हमें हिन्दीको दूसरी भाषाकी तरह सीखना आरंभ कर देना चाहिये। देशप्रेमके खातिर अैसा करना हमारा फर्ज हो जाता है।

३–२–'५६ — म० प्र०]
(अंग्रेजीसे)

* जहां तक मैं जानता हूं मैसूर राज्यमें भी। — संपा०

शिक्षाकी समस्या

लेखक : गांधीजी; अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ३–०–० डाकखर्च १–२–०
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

www.vinoba.in

पुनर्निर्माणके पथ पर — १

[पहले मैं अेक लेखमें कह चुका हूं कि अुड़ीसामें ग्रामदानवाले विस्तारमें कार्यकर्तागण, भूदानके जरिये, सर्वोदयकी दृष्टिसे ठोस ग्रामविकासका या गांवोंके पुनर्निर्माणका काम कर रहे हैं। (देखिये ह० सेवक, ता १४–१–'५६) सर्व-सेवा-संघके मंत्री श्री सहस्रबुद्धे अिस काममें खास तौर पर लगे हुअे हैं। नीचेकी लेखमाला अपने कामका खयाल देनेके निमित्तसे अुन्होंने 'भूदान-यज्ञ' नामक हिन्दी पत्रमें देना शुरू की है। यह अुसकी पहली किस्त है।

पाठक देखेंगे कि सेवाभावकी नींव पर वहां अेक ग्रामसेवा-तंत्र बन रहा है। और अुसके आधार पर ग्राम-सभाअें रची जा रही हैं। यह सारा काम नयी तालीमकी नीतिसे चलेगा, तो तरह तरहके सेवाकार्यों द्वारा लोगोंकी समाज-शिक्षाका काम भी होगा। और अिसके साथ वे सही रूपमें सेवा और सहकारके भावसे गांवका अपना काम करेंगे। सहकारका सही अर्थ यह है कि हम जो काम करते हैं सो मालकियतकी स्वार्थदृष्टिसे नहीं, परंतु सेवाकी सर्वोदयी दृष्टिसे करते हैं। यदि यह भाव न हो, तो सहकार और लिमिटेड कंपनी तथा अुसकी अेजन्सीके काममें कोओी खास फरक नहीं रहेगा। अिस तरहसे यदि हम काम करें तो वह कर्मकांड नहीं, कर्मयोग बनता है। गांवोंका पुनर्निर्माण भी अिस तरहके कर्मयोगकी दृष्टिसे करना है। कोरापुट जिलेमें चल रहा काम अिस दृष्टिसे हमें बोधप्रद और रसपूर्ण मालूम होगा।

२–२–'५६ — म० प्र०]

कोरापुट जिलेमें छह-सात सौ गांव समग्र ग्रामदानमें मिले हैं। अिन गांवोंके विकासका काम शुरू हो जानेके कारण और भी गांव ग्रामदानमें मिल रहे हैं। चार-साढ़े चार हजार वर्गमीलका प्रदेश, अुसमें ढ़ाओी-तीन हजार गांव और अुनमें भी ग्रामदानमें मिले हुअे छह-सात सौ गांव। अिन गांवोंमें कैसे पहुंचें, यही मुख्य और कठिन समस्या हमारे सामने थी। गत दो-ढाओी महीनोंके अनुभवसे हमने तय किया कि क्षेत्रफलका विचार छोड़ दिया जाय। तीन-चार मीलकी त्रिज्यामें जितने गांव आयें, अुन गांवोंकी अेक-अेक अिकाओी मानी जाय और अिस तरह जितने केन्द्र बनें, अुतने बनाये जायं। अुपर्युक्त दृष्टिसे गत डेढ़-दो महीनोंमें निरीक्षण किया गया और करीब ३५ केन्द्र स्थापित करनेका काम हमने हाथमें लिया है। ग्रामदानमें संपूर्ण रूपसे प्राप्त करीब दससे पंद्रह गांवोंका अेक-अेक केन्द्र बनाया गया है। केन्द्र समग्र ग्रामदानमें मिले हुअे गांवमें ही बने, अैसा नियम है। अुसके अिर्दगिर्द चार मीलकी त्रिज्यामें दससे बीस ग्रामदानके गांव और अुतने ही दूसरे गांव आते हैं। दोनों प्रकारके गांवोंकी लोकसंख्या करीब चार सौ परिवारोंकी होती है। हमारा अेक केंद्र करीब चार सौ से पांच सौ परिवारोंको मदद पहुंचानेकी दृष्टिसे बनाया गया है।

ग्राम सभाअें

आज तो हम ग्रामदानमें मिले गांवोंके बारेमें ही विचार कर रहे हैं। केंद्रकी मर्यादामें आनेवाले दस-पंद्रह गांवोंके हरअेक परिवारका मुख्य व्यक्ति (कर्ता पुरुष) हमारी ग्राम-सभाका सदस्य होता है। सदस्यको पूंजीमें अपने हिस्से (शेयर) के तौर पर अेक रुपया और प्रवेश-शुल्क आठ आना देना होता है। कुछ जगह सौ और कुछ जगह दो सौ हमारी ग्राम-सभाके सदस्य बने हैं। अिस तरह १६ से २० ग्राम-सभाओंकी स्थापना करनेकी पूर्व-तैयारी हो चुकी है।

ग्राम-भंडार

अिन सभाओंके जरिये १६ ग्राम-भंडारोंका भी निर्माण किया गया है। ग्राम-सभाकी ओरसे दुकान चलानेके लिअे अेक कमेटी बनायी जाती है। अिस कमेटीके द्वारा ही अुपर्युक्त भंडारके कामका

संचालन होता है। ग्राम-सभा जितनी पूंजी जुटा सकी हो, अुसकी दुगुनीसे दसगुनी तक रकम सर्व-सेवा-संघकी ओरसे अुपरोक्त दुकानको पूंजीके रूपमें दी जाती है। कमेटी द्वारा चलनेवाली ये दुकानें आगे चलकर सहकारी संस्थाअें बनेंगी। आज तो हमने अुन्हें बाजाब्ता सहकारी संस्था बनानेकी दृष्टिसे कोअी विशेष कोशिश नहीं की है। गांवोंके लोग जितना समझ सकें और अपनी समझके आधार पर चल सकें, अुतना ही प्रारंभमें शुरू किया गया है।

दुकानमें मिट्टीका तेल, मीठा तेल, नमक, मिर्च, हाथ-करघेका कपड़ा आदि सिर्फ पांच-सात चीजें ही बिक्रीके लिअे रखी जाती हैं। गांवका अनाज या तिलहन दुकानकी ओरसे हम नहीं खरीदते। लेकिन गांववाले अगर अैसे अनाजका संग्रह करना चाहें, तो दुकानकी ओरसे वैसी सुविधा प्राप्त करा दी जाती है। जितना अनाज रखा जायगा, अुसकी पचास फी सदी कीमत दुकानकी ओरसे अुस व्यक्तिको दी जाती है।

सहकारी दुकानोंकी व्यवस्था

बिक्रीकी जिम्मेदारी, जिसकी वह चीज है, अुसकी रहेगी। अच्छा बाजार-भाव मिलने पर वह अुस चीजको बेच दे, दुकानसे ली हुअी पेशगी रकम दुकानको वापस कर दे और अुस पर जो मुनाफा मिले, अुसे वह खुद रख ले। पेशगी दी हुअी रकम पर ब्याज नहीं लगेगा। या अुपर्युक्त खरीद-बिक्री पर कमीशन भी न लिया जाय, अैसी फिलहाल व्यवस्था की है। गांवके अेकाध घरमें अैसी दुकान खुलती है। ग्राम-सभा द्वारा निर्वाचित कोअी सदस्य अुसे चलाता है। दुकान दिनमें अेक घंटा खुली रहती है। सप्ताहमें अेक दिन दुकानके लिअे माल खरीदनेका काम ग्राम-सभाके दो-चार सदस्य करते हैं। किसी तरहके खास व्यक्तिकी नियुक्ति किये बिना दुकानका काम चल रहा है। काम बढ़ने पर शायद अेकाध व्यक्तिकी नियुक्ति करनी पड़े।

अिस प्रयोगकी ओर लोग बहुत आशासे देख रहे हैं। जगह-जगह पर ग्राम-सभाओंकी स्थापना हो रही है। १६ दुकानें आज चल रही हैं। जनवरीके अन्त तक अिन दुकानोंकी संख्या करीब २५ तक बढ़ेगी, अैसा अन्दाज है। ये दुकानें साधारण रूपसे जहां केंद्र हो, अुसी गांवमें खोली जाती हैं। अुस गांवके निवासी अिस दुकानके सदस्य बनते हैं। अुन्हें अगर दुकानमें अेक व्यक्ति रखनेकी जरूरत महसूस हुअी तो वे नियुक्त कर लेंगे। छोटे-छोटे गांवोंसे जितना भाग पूंजीका मिला हो, अुसके अनुपातमें अुस गांवका अेक अधिकृत व्यक्ति आकर माल दुकानसे ले जाता है और वह अपने गांवमें दुकानकी शाखाके तौर पर अुसे बेचता है।

योजनाका स्वरूप

आगे चलकर केंद्रकी जगह मुख्य दुकान और गांव-गांवमें अुसकी शाखाअें रहेंगी, अैसा स्वरूप अिस योजनाका होगा। ग्राम-सभाके सब सदस्य निरक्षर होनेके कारण वे हिसाब रखनेका काम कर नहीं सकते। हमारी निर्माण-समितिकी ओरसे महीने-डेढ़ महीनेमें अेक बार हमारा कार्यकर्ता वहां जायगा, सब चीजोंकी वह नाप-तौल करेगा, और दुकानका हिसाब बना कर देगा। याददाश्तके लिअे दुकान चलानेवाला थोड़ेमें कुछ लेखा रखता है। सामान्यतः केन्द्रके स्थान पर ही दुकान होनेके कारण वहां हमारे कार्यकर्ता भी हमेशा आते-जाते रहते हैं। कुछ जगह स्थायी रूपसे कार्यकर्ता रहते हैं। अुनकी मददसे यह कच्चा लेखा याददाश्तके लिअे बना लिया जाता है। अुससे हिसाब लिखनेका काम यथावकाश हो सकता है। आशा की जाती है कि जून माह तक करीब ४० भंडार ४० मध्यवर्ती केंद्रोंके स्थान पर, अुन केंद्रोंके कार्य-क्षेत्रमें अन्तर्भूत होनेवाले दो-ढाअी सौ परिवारोंमें चलने लगेंगे और अुनकी शाखाअें भी गांव-गांवमें शुरू हो जायेंगी। धीरे-धीरे ये भंडार सहकारी विविध-कार्यकारिणी संस्था (मल्टीपरपज सोसायटी) बनेंगे और अुनके द्वारा खरीद-बिक्रीके तथा अन्य काम चलेंगे।

कार्यकर्ताओंका जाल

कोरापुट जिलेमें कार्यकर्ताओंका जाल बिछ जावे, अैसी कोशिश हो रही है। कोरापुट, गंजामके क्षेत्रमें कस्तूरबा-ट्रस्टकी अुत्कल-शाखाकी ओरसे २२ बहनें पहाड़ोंकी सुदूर घाटियोंमें कार्य कर रही हैं। नवजीवन-मंडलकी ओरसे ९ बहनें काम कर रही हैं। ये ३१ बहनें १५ केंद्रोंके स्थान पर रहती हैं। अुन सबोंने कस्तूरबा-ट्रस्टका दो-ढाअी सालका अभ्यासक्रम पूरा किया है। किसीके चार साल, तो किसीके छह साल सेवाकार्यमें बीते हैं। ये बहनें जिन गांवोंमें जाकर बस गयी हैं, अुन गांवोंमें शराबखोरी धीरे-धीरे कम हो रही है, स्वच्छता बढ़ रही है। छोटे बच्चोंको पढ़ानेका काम अुन्होंने शुरू किया है। गांवोंकी स्त्रियोंसे संपर्क बढ़ाया है। गांवोंमें अिससे नैतिक वातावरण भी निर्माण होनेमें मदद हो रही है। हमारे गांवमें अेक केंद्रकी स्थापना होनी चाहिये, अैसी मांग समग्र ग्रामदानमें प्राप्त गांवोंसे होती है। अैसे केंद्रके लिअे गांववाले घर भी बना देते हैं और ये कस्तूरबा-ट्रस्टकी सेविकाअें हिम्मतके साथ अुन गांवोंमें कार्यके लिअे जा बैठती हैं। अपनी शक्तिके अनुसार वे वहां सेवा-कार्य भी शुरू कर देती हैं। अिनमें से हरअेक सेविका यहांके कामके लिअे बहुत बड़ी शक्ति है।

भूमि-वितरणका काम

पू० विनोबाजीकी भूदान-पदयात्रा अिस जिलेमें जब चल रही थी, अुस समय गरीब दो सौ कार्यकर्ता यहां काम कर रहे थे। गांव-गांवमें प्रचार हो रहा था। पू० विनोबाजीके आंध्र चले जाने पर वह कार्य आज भी कुछ हद तक वैसे ही चल रहा है। करीब ८० भूदान-कार्यकर्ता जिला भूदान-समितिकी ओरसे हमारे अिस क्षेत्रमें आज काम कर रहे हैं। अुनमें से ३०–४० आदिवासी कार्यकर्ता हैं। वे मुख्यतः दुभाषियोंका काम करते हैं। दस-बीस कार्यकर्ता अिसी जिलेके हैं, लेकिन वे आदिवासी नहीं हैं। अिन सब कार्यकर्ताओंकी सहायतासे भूमि-वितरणका ही मुख्य काम आज चल रहा है।

भूमि-वितरणका काम जितना आसान समझा जाता है, अनुभवसे अुतना आसान साबित नहीं हुआ है। अिसलिअे भूमि-वितरणकी जानकारी रखनेवाले पांच अमीनोंकी नियुक्ति १ जनवरी १९५६ से की गयी है। ये पांच अमीन और अधिकसे अधिक संख्यामें भूदान-कार्यकर्ता अेक-अेक थानेमें जायेंगे और यह टोली अुस क्षेत्रमें ग्रामदान या भूदानके रूपमें मिली हुअी सारी भूमिका वितरण करेंगे और बादमें दूसरे क्षेत्रमें जायेंगे। यह अनुभव हुआ है कि अेक-अेक कार्यकर्ता अकेला वितरणके कामको ठीक-ठीक अंजाम नहीं दे सकता, अिसलिअे यह व्यवस्था करनी पड़ी है। अिन पांच-छह अमीनोंकी सहायतासे अेक-अेक क्षेत्रके वितरणका काम हमारे भूमि-दान-कार्यकर्ता पूरा करेंगे। अुस क्षेत्रमें अेक ही समय तीस या अुससे भी अधिक कार्यकर्ताओंको शायद जाना पड़े। सारी शक्ति बटोर कर वितरणका यह कार्य चलाया जायगा और अिस जिलेका सारा वितरण जून मासके अन्त तक सुचारु रूपसे पूरा हो जायगा। हर-अेक व्यक्तिको अुसकी जमीन दिखा दी जायगी और जांच-पड़ताल द्वारा दान प्रमाणित कर दिया जायेगा। यहां तीन तरहकी जमीन है: धानकी खेतीके लायक जमीन, दीगर फसलकी जमीन, और कृषि-योग्य पड़ती जमीन। आग्रह यह रखा गया है कि हरअेकको हर तरहकी जमीनका हिस्सा मिले। आगामी छह महीनोंके लिअे भूदान-कार्यकर्ताओंका यही काम रहेगा।*

(चालू)

अ० वा० सहस्रबुद्धे

* ता० २७–१–'५६ के 'भूदान-यज्ञ' से।

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

११ फरवरी १९५६

अनेक-भाषी राज्यरचना और अेकता

बंगाल और बिहारके मुख्यमंत्रियोंने अचानक अेक नअी बात पैदा की कि हमारे दो राज्योंको फिरसे मिलाकर अेक ही द्विभाषी राज्य बनाया जाय तो कैसा हो? बम्बअी और अन्य स्थानों पर जो दंगा-फिसादका वातावरण था, अुसकी भूमिकाकी वजहसे अिस सुझावको अजीब प्रोत्साहन मिला और चारों तरफसे अिस भावनाका स्वागत किया गया। अब जैसे जैसे समय बीत रहा है, वैसे वैसे अिस सुझाव पर विचार किया जा रहा है और अुसके भीतर रहे मुद्दे खुल रहे हैं। यह अच्छी बात है। क्योंकि अिस सुझावके प्रवाहमें बहे बिना दिमागका सन्तुलन कायम रखकर अुसकी अच्छी तरह जांच की जानी चाहिये और यथासंभव जल्दी ही अुसके बारेमें सच्चा निर्णय किया जाना चाहिये।

अेक विचार यह पेश किया जाता है कि द्विभाषी या बहु-भाषी राज्यरचना अेकताकी प्रेरक होगी। मुझे लगता है कि अिसमें तर्कदोष है। भारतका महाराज्य ही क्या बहुभाषी नहीं है? अगर अिससे अेकताकी प्रेरणा मिलती हो तो भारतमें अैसा क्यों नहीं होता? बल्कि हमारे सामने तो प्रश्न यह है कि बहुभाषी राष्ट्र होते हुअे भी अेकता किस तरह कायम रखी जाय। अिसलिअे अैसा तो नहीं कहा जा सकता कि भारतकी तरह ही अुसके दूसरे पांच छः बहुभाषी झोन या खंड-राज्य रचने मात्रसे ही अेकताकी प्रेरणा मिलेगी या अेकता बढ़ेगी। अुल्टे, अिसका नतीजा यह हो सकता है कि बहुभाषिताकी मूल कठिनाअी, जिसे हल करना था, वैसी ही रही और अुसमें पांच या छः खंडोंकी वृद्धि ही की! अिसलिअे अिन सबकी अेकताका नया सवाल फिर खड़ा हो सकता है! कहनेका आशय यह कि भारतकी बहुभाषिताकी कठिनाअीका हल झोन रचनेके सुझावमें नहीं है।

राज्यरचनाके सम्बन्धमें दूसरा मुद्दा आर्थिक और औद्यो-गिक विकासका ध्यानमें रखनेकी बात कही जाती है। यह मुद्दा केवल प्रदेश-राज्योंसे ही सम्बन्ध नहीं रखता; यह तो सारे भारतका मिला-जुला प्रश्न है। विकासका विचार सारे राष्ट्रकी दृष्टिसे होना चाहिये। अिस तरह विचार न करके अैसी भावनासे विकासके प्रश्नको देखा जाता है, मानो भाषावार अलग अलग कौमें हमारे प्रदेश-राज्य ही हों। कहिये कि लोगोंकी अपनी भाषाओं द्वारा प्रदेशोंका राजकाज, शिक्षण, कानून-निर्माण, न्याय वगैराकी व्यवस्था करनेका विचार अेक तरफ रह गया और अुसके स्थान पर भाषावार कौमवाद हमारे मन पर हावी हो गया। मानो धर्मवार राष्ट्रोंका विचार छोड़कर हम भाषावार राष्ट्र निर्माण करनेकी भूलमें फंस गये! वर्ना यह बात कैसे कही जा सकती है कि प्रदेश-राज्योंके अपने-अपने अलग भूगोल व अितिहास और संस्कृति भी है?

भारतकी अेकताके लिअे यह जरूरी है कि अब प्रदेश अपने स्वतंत्र भूगोल, अितिहास वगैराके खयाल छोड़ दें। जिस समय हमारे राष्ट्रमें अलग अलग छोटे-छोटे राज्य थे और वे आपसमें लड़ते रहते थे, अुस समयकी सारी बातें अुस समयके लोगोंका अितिहास थीं। लेकिन आज तो नये ही भारतका जन्म हुआ है। वह अेक प्रजासत्ताक राज्य है, अुसमें राजाशाही नहीं चलती। अुसे अिसी तरह जीना और काम करना सीखना है। अिसी कारण मौजूदा राज्योंकी सीमारेखाके झगड़े गलत ही नहीं, राष्ट्रकी अेकताका नाश करनेवाले सिद्ध होते हैं। भारतके प्रदेशोंकी भाषावार राज्य-व्यवस्था करनेके बदले हम भाषावार स्वतंत्र राज्यरचना करनेकी ओर बह गये हैं! अिस गलतीमें से यदि हम समझ-बूझ कर बाहर नहीं निकले तो स्वराज्य लुप्त हो जायगा; और भारतकी स्वतंत्रता तथा शांतिका क्या होगा, अिसका विचार करने पर तो कंपकंपी पैदा होने लगती है।

अिसलिअे राज्योंका अस्तित्व अगर भारतमें रखना हो, तो राज्यरचनाके विचारके सम्बन्धमें विकासके लोभप्रेरक मुद्दे पर बहुत जोर नहीं देना चाहिये। यदि अुसीको मुख्य मानकर चलना हो तो बेहतर यह क्यों न माना जाय कि सारे भारतके अेकचक्री राज्यके केवल शासनिक प्रान्त या भाग ही बना दिये जायं और प्रदेश-राज्योंके लिअे अलग गवर्नर, धारासभा वगैरासे सम्बन्ध रखनेवाली संघ-व्यवस्था छोड़ दी जाय? पर अिस सुझावसे शायद ही सब लोग सहमत होंगे। संविधानमें अैसा परिवर्तन आज तो असंभव है, अैसा समझकर चलनेमें ही बुद्धिमानी मानी जायगी। लोकशाहीके विकासके लिअे भी शायद वह अनुकूल न रहे।

राष्ट्रके पूर्व, पश्चिम आदि पांच छः दिशा-खंड किये जायं, तो भी भारतकी बहुभाषिताका सवाल तो खड़ा ही रहेगा। केवल अुस सवालके पांच छः भाग हो जायंगे। क्योंकि वैसे दिशा-राज्योंके राजकाज, शिक्षण वगैराकी भाषाका विचार तो करना ही पड़ेगा। वास्तवमें, भारतकी नअी राज्यरचनाके पीछे यही मुद्दा है। अुसकी अुलझनोंको सुलझानेका समय आ गया है। देशमें अंग्रेजी भाषाका स्थान क्या रहेगा? देशकी महान प्रदेश-भाषाओं या लोकभाषाओंका स्थान क्या रहेगा? हमारी अनेक-भाषी प्रजाके लिअे अेक सामान्य आन्तर-भाषा होनी चाहिये। वह भाषा हिन्दी होगी। अुसे देशमें किस तरह चालू किया जाय? राष्ट्रके पुन-र्निर्माणके अिन महान रचनात्मक प्रश्नोंको हल करके अुन पर अमल करनेके लिअे ठीक रचनावाले प्रदेश-राज्य हमारे यहां हैं? वे अिन प्रश्नोंको सीधे हाथमें लेकर किस तरहसे यह महान रचना-कार्य शुरू करेंगे? ये प्रश्न भी भारतके विकाससे ही सम्बन्ध रखते हैं; अिससे भी बढ़कर ये भारतके सांस्कृतिक या सामाजिक पुन-र्निर्माणके अथवा सच्ची लोकशाहीके विकासके प्रश्न हैं। राष्ट्रके नेता अिस विकासकी ओर सीधी नजर रखकर देशकी राज्य-रचनाका विचार करें तो ठीक हो। अैसी राज्यरचनाकी सीमा-रेखायें नये पाकिस्तानकी सीमारेखायें नहीं हैं, अिसे समझ कर आज हम सबका चलना बहुत जरूरी है।

५-२-'५६

(गुजरातीसे)

मगनभाई देसाई

टिप्पणियां

भूदानके बारेमें प्रधानमंत्री

पंडित जवाहरलाल नेहरूने अपने हालके केरल-प्रवासमें नीला-म्बुरमें १,००० अेकड़ जमीन बांटी। अुन्होंने भूदान-आन्दोलनमें बड़ी दिलचस्पी बतलाअी। जमीनका बंटवारा अेक बड़ी सार्वजनिक सभामें किया गया। अुन्होंने बड़े प्रेमसे अुन आदिवासी भाअीसे हाथ मिलाया, जो दान पानेवालोंके प्रतिनिधिके रूपमें चुने गये थे। सभामें दिये गये अपने भाषणमें, जिसमें मुख्य चर्चा अुन्होंने साम्प्रदायिक संस्थाओं द्वारा राजनीतिमें भाग लेनेसे होनेवाले नुक-सानकी की, भूदानके विषयमें पंडित नेहरूने कहा :

"आपने देखा कि मैंने अभी अेक बेजमीन आदिवासी मित्रको प्रमाणपत्र बांटा।

"यहां नीलाम्बुरमें भूदान-आन्दोलनके साथ मेरा जो सम्पर्क हुआ, अुससे मुझे बड़ी खुशी होती है। यह बात विशेष रूपमें आनन्द देनेवाली है कि मेरे हाथसे यह प्रमाणपत्र पानेके लिअे सब लोगोंमें से अेक आदिवासी भाअीको चुना

www.vinoba.in

गया। मैं दाताओंको धन्यवाद देता हूं और आशा रखता हूं कि दूसरे लोग भी अिस तारीफके लायक अुदाहरणका अनुकरण करेंगे। जिन लोगोंको यह जमीन मिली अुन सबको और अिस समारंभकी व्यवस्था करनेवाले भूदान-कार्यकर्ताओंको भी मैं धन्यवाद देता हूं।"

मलाबारकी अेक दूसरी सार्वजनिक सभामें भाषण देते हुअे, जिसमें अुन्होंने जमींदारों द्वारा काश्तकारोंको बेदखल करनेके प्रश्न पर चर्चा की, प्रधानमंत्रीने भूदानके सम्बन्धमें नीचेके शब्द कहे :

"हमने बड़े बड़े जमींदारोंका अन्त कर दिया है। लेकिन अभी जमीनकी समस्या हल नहीं हुअी है। आप जानते हैं कि आचार्य विनोबा भावे भूदान-आन्दोलन चला रहे हैं। अुनकी पद्धति हमारे देशमें जमीनकी समस्या हल करनेकी अुत्तम पद्धति है। अुन्हें सारे देशमें लाखों अेकड़ जमीन दानमें मिल चुकी है। यह अेक ध्यान देने लायक बात है, जो शायद दूसरे देशोंमें नहीं हो सकती थी। वह सामाजिक समस्याओंको भी, जहां स्थापित हितोंके साथ संघर्षमें आना पड़ता है, हल करनेका भारतीय मार्ग है। अिसलिअे हमें भूदान-आन्दोलनको अवश्य ही प्रोत्साहन देना चाहिये। लेकिन यह काफी नहीं है। हमें दूसरी तरह जमीन-सुधारके अिस कामको पूरा करनेके लिअे कानून और दूसरे साधनोंसे आगे बढ़ना होगा।"

पंडित नेहरूने जो जमीन बांटी वह बहुत अच्छी किस्मकी और अुपजाअू है, और अैसे कदम अुठाये जा रहे हैं जिससे अगले बरसातसे पहले जमीन पानेवालोंको बसा दिया जाय।*

(अंग्रेजीसे)

'बी० सी० जी० दिवस' की जिद

संपादक, हरिजन

बी० सी० जी० के टीकेके विषयमें मैं अितने आग्रहके साथ जो कहता और लिखता रहा हूं, वह सब मैं यहां दोहराना नहीं चाहता। यह घोषणा की गअी है कि २० फरवरीका दिन अखिल भारतीय बी० सी० जी० दिवसकी तरह मनाया जायगा। यह बड़े दुःखकी बात है कि भारतका स्वास्थ्य-मंत्रालय योग्य दलीलोंके सामने झुकनेसे अिनकार करता है और अिस निकम्मे टीकेको आगे बढ़ानेका आग्रह करता है, जिसे अमेरिकाके स्वास्थ्य-अधिकारियोंने लगभग पूरी तरह छोड़ दिया है। अिंग्लैण्डका स्वास्थ्य-विभाग अभी भी अुसके बारेमें जांच-पड़ताल कर रहा है और अुसकी विशेष कमेटीने अभी तक अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करना ठीक नहीं समझा है — जिसकी लम्बे समयसे प्रतीक्षा की जा रही है — यद्यपि डॉ० बेंजामिन अुसके बारेमें आशावादी हैं। डॉ० कैरोल पामरने हाल ही सार्वजनिक रूपमें अिस बातका समर्थन किया है कि आअी० अेन० अेच० नामक दवाअी अगर मुंहसे दी जाय, तो अुसका बी० सी० जी० से ज्यादा अच्छा असर या बी० सी० जी० जितना ही अच्छा असर होता है। जब डॉ० कैरोलने खुद बी० सी० जी० के बारेमें यह राय प्रकट की है, तब भारतके स्वास्थ्य-मंत्रालयको क्षयके जीवित जन्तुओंका टीका लगानेका आग्रह क्यों रखना चाहिये?

यह तो बिलकुल जानी हुअी बात है कि जिन लोगों पर क्षयका घातक या गंभीर आक्रमण होता है, अैसे सब या लगभग सब लोग क्षयके चिह्न प्रत्यक्ष दिखाअी देनेसे पूर्व वर्षोंसे 'पोज़िटिव' थे। बी० सी० जी० के टीकेका ध्येय और हेतु कृत्रिम 'पोज़िटिव' पैदा करनेका होता है। सामान्य 'पोज़िटिव' स्थिति अभी तक जो काम नहीं कर पाअी है, वह कृत्रिम रूपमें पैदा की जानेवाली 'पोज़िटिव' स्थिति कैसे कर सकती है? अर्थात् वह प्रत्यक्ष लक्षणोंवाले क्षयको कैसे रोक सकती है? बिलकुल न होनेसे कुछ होना अच्छा है। लेकिन मानव-शरीरके साथ व्यवहार करनेमें किसी चीजके बिलकुल न होनेसे किसी निकम्मी चीजका होना बेहतर नहीं है। यह बड़े दुःखकी बात है कि श्री राजकुमारी अमृतकुंवर अिस विषयमें भी अुतनी ही जिद्दी हैं, जितनी वे बन्दरोंको विदेशोंमें भेजनेके बारेमें रही हैं, जहां अुन्हें कृत्रिम रूपसे बीमारीके कीटाणुओंवाले टीके लगाकर पीड़ा पहुंचाअी जाती है।

४–२–'५६ च० राजगोपालाचार्य

(अंग्रेजीसे)

* ता० २४–१–'५६ के 'भूदान' से अुद्धृत।

अम्बर चरखा क्या है?

[ता० ४–२–'५६ के अंकके अनुसंधानमें]

२

अम्बर चरखा

१२. अिस अवधिमें तरह तरहके जो बहुतसे नमूने तैयार किये गये, अुनमें सबसे ज्यादा सफल रहा दो तकुओंवाला लकड़ीका चरखा, जो १९४९ में तामिलनाड़के तिरुनेवेल्ली जिलेके पापनकुलम् गांवमें श्री अेकम्बरनाथन् द्वारा तैयार किया गया था। वह रिंग-कताअीकी पद्धतिवाला अेक छोटासा चरखा था और नलीदार पूनियां बनानेवाला विशेष यंत्र अुसका अेक अंग था। अुसमें रिंगवाले दो तकुअे थे और सींगके दो रोलर अुसके साथ जोड़े गये थे तथा अुनके साथ स्प्रिंग लगाये गये थे। हाथसे घूमनेवाले बड़े चक्रके साथ सूतकी मालों द्वारा छोटे चक्र जोड़े गये थे और अिस तरह बड़े चक्रके घूमनेसे वे छोटे चक्र घूमते थे। शुरूके अिस नमूनेकी अुत्पादन शक्ति प्रति घंटे अेक गुंडीसे कुछ ज्यादा थी। अुस पर कता हुआ सूत मजबूतीकी दृष्टिसे सन्तोषप्रद था, परन्तु वह समान नहीं था। अुस चरखेकी यांत्रिक रचना, अुसकी अुत्पादन शक्ति और अुसे बनानेकी आसानी वगैरा बातोंको देखकर चरखा-संघको लगा कि पहले प्रयत्नके रूपमें वह अच्छा है और अुस पर अधिक शोध की जानी चाहिये। श्री अेकम्बरनाथन्को अुनके अिस साहसके लिअे पारितोषिक दिया गया और अपने नमूनेमें सुधार करनेके लिअे आवश्यक सुविधायें भी दी गअीं। अुन्होंने अिस नमूने पर पहले कोविलपट्टी और बादमें तिरुपुरमें शोध-काम किया।

१३. १९५०-५१ में श्री अेकम्बरनाथन्ने श्री नन्दलाल पटेलकी मददसे चरखेका अेक काफी सुधरा हुआ नमूना बनाया। वह चार तकुओंका था, जो पूरी तरह लकड़ीका बनाया गया था। हाथसे चलाये जानेवाले मुख्य चक्रके साथ जोड़ी हुअी छोटे आकारकी कटी लकीरोंवाली अनेक घिरनियां अपने-आप सूत लपेटनेवाले तकुओंको गति प्रदान करती थीं। नलीदार पूनियोंसे कतनेवाले सूतके अंकोंका नियमन करनेके लिअे अधिक कटी लकीरोंवाली घिरनियां लगाअी गअी थीं। पूनियां अलगसे बनाअी जाती थीं। अेक होशियार कतवैयेके हाथ अिस चार तकुओंवाले लकड़ीके चरखे पर ६ घंटोंमें १६ गुंडी अच्छी जातिका सूत काता जाने लगा। अिस प्रकार अुत्पादन क्षमताके खयालसे तो वह बिलकुल सन्तोषप्रद नमूना था, परन्तु अुसे चलानेकी अनेक समस्यायें थीं : अुसमें कटी लकीरोंवाली घिरनियोंकी संख्या ज्यादा थी और चरखा चलाना शुरू करनेसे पहले सूतके नम्बरके लिअे ठीक ढंगसे जिन्हें जमाना पड़ता था अुन सूत और चमड़ेकी मालोंकी संख्या भी बहुत थी। अिसके सिवा, अुस चरखेको चलानेकी तैयारी करनेमें लगभग दो घंटेका समय जाता था। क्योंकि अनेक मालोंको ठीक ढंगसे जमाना आवश्यक होता था।

www.vinoba.in

१४. मालों और घिरनियोंकी संख्या घटाने और समयके बिगाड़को टालनेके लिअे दांतोंवाले चक्र लगाये गये। अेक प्रयोजनके लिअे यंत्रोंसे बने हुअे धातुके पुर्जे लगानेके फलस्वरूप अगस्त १९५३ में संपूर्ण धातुके बने हुअे चरखेने जन्म लिया। अिससे यह सिद्ध हो गया कि कार्यक्षम चरखा खोजनेमें कोअी पूर्वग्रह बाधक नहीं हुआ और अिस सम्बन्धमें केवल टेकनिकल सुधारोंका ही खयाल रखा गया था।

१५. पूरी तरह धातुके बनाये हुअे अनेक चरखोंमें श्री अेकम्बरनाथन्‌के मूल नमूने परसे श्री वर्केडी तथा श्री केशवलाल गांधीने सर्व-सेवा-संघके कहनेसे जो चरखा बम्बअीमें तैयार किया, वह सबसे ज्यादा सन्तोषजनक था। पहले अुस चरखे पर केवल दो तकुओंसे प्रयोग शुरू किया गया। वह चलानेमें आसान था और लगातार २४ घंटे चलाने पर अुससे प्रति घंटा दो गुंडी सूत कतता था। समानता और मजबूतीमें यह सूत बहुत अच्छा होता था। परन्तु जब अुसमें चार तकुअे लगाये गये तब अुसे चलाना कठिन हो गया और अुसमें काफी परिश्रम करना पड़ता था। और, अुसकी ३०० से ४०० रुपयेकी अंदाजी कीमत भी हमारे देशकी स्थितिको देखते हुअे बहुत ज्यादा थी। अिसलिअे फिर लकड़ीके नमूनेकी तरफ मुड़कर शोधका काम किया गया। अुसके फलस्वरूप धातुके चरखेके तथा श्री अेकम्बरनाथन्‌के लकड़ीके असल नमूनेके दोष अेकदम दूर हो गये।

१६. लकड़ीके चरखेके पहले नमूनेके आधार पर दिसम्बर १९५४ में श्री नन्दलाल पटेलने दांतेदार चक्रोंकी अेक जोड़वाला तथा कम मालोंवाला दूसरा चार तकुओंका अेक लकड़ीका चरखा तैयार किया। वह चलानेमें आसान, कीमतमें सस्ता और संतोषजनक रूपमें काम दे सकनेवाला था। अुस नमूनेको अधिक विकासके लिअे हाथमें लिया गया।

१७. श्री नन्दलाल पटेलके नमूनेमें जो अनेक सुधार किये गये, अुनमें अच्छी तरह कातनेकी दृष्टिसे सबसे महत्त्वपूर्ण सुधार था कागजके बॉबिन दाखिल करनेका। अधिकतर अनेक तकुओंवाले चरखे चलानेमें खास कठिनाअी तकुअे आगेपीछे न हटें अिस दृष्टिसे अुन्हें संतुलित करनेकी थी। साधारण तकुअे लकड़ीके बॉबिनों पर सन्तोषप्रद काम नहीं करते थे। लकड़ीके बॉबिनोंकी जगह कागजके बॉबिन दाखिल करनेसे अिस खास कठिनाअीका कारगर हल मिल गया। कागजके बॉबिनकी शोध नवम्बर १९५४ में कारखानेके अेक सहायक मिस्त्रीने की थी। कागजके बॉबिनोंके साथ चरखा चलाने पर प्रतिघंटा ३½ गुंडी सूत करने लगा।

१८. धीरजके साथ की गअी शोधों और प्रयोगोंके फलस्वरूप अैसे दूसरे कअी सुधार चरखेमें किये गये। ये सारे सुधार चरखा चलानेकी आसानी और कार्यक्षम अुत्पादनका अुद्देश्य ध्यानमें रखकर किये गये थे। अिस तरह बोर्डने अपने विकास-कार्यक्रमको सफल बनानेके लिअे जिस अम्बर चरखे पर आधार रखा है, वह गांवके सुतार गांवमें ही बना सकें अैसा सस्ता, कार्यक्षम, अुत्पादक और आसानीसे चलाने लायक साधन तैयार करनेके लिअे लगनके साथ निरन्तर की गअी शोधका परिणाम है।

अम्बर चरखेका वर्णन

१९. बोर्ड जिस अम्बर चरखेको सारे देशमें व्यापक पैमाने पर दाखिल करना चाहता है, वह चार तकुओंका हाथसे चलाया जानेवाला लकड़ीका चरखा है। वह २१ अिंच लम्बा, १६ अिंच चौड़ा और २१ अिंच अूंचा है। अुसका वजन २६ पौंड है। 'सीजन्ड' लकड़ीके अेक चौखटेके सिवाय अुसमें तीन अनेक कटी लकीरोंवाली लकड़ीकी घिरनियां हैं। अेक घिरनी चार लकीरोंवाली, दूसरी तीन लकीरोंवाली और तीसरी दो कटी लकीरोंवाली है। हरअेक घिरनीको सूतकी माल द्वारा हाथसे घुमाये जानेवाले चक्रके साथ जोड़ा गया है। चरखेके लोहेके भाग अिस तरह हैं: चार तकुओंकी रिंग, छेदोंवाले चार रोलर, दांतेदार चक्रोंकी अेक जोड़, हार्वर बॉस, ट्रेवलर और स्प्रिंग। अिसके सिवा, धातुके छेदोंवाले रोलरों पर करीब १। अिंच चौड़े रबरके रोलरोंकी चार जोड़ हैं।

कताअीकी क्रिया

२०. खास तौर पर बनाअी जानेवाली नलीदार पूनियां चरखेके बाहर अेक ओर रखी जाती हैं। वे छेदोंवाले रोलरों द्वारा तारोंकी छोटी रिंगमें जाती हैं और तेजीसे घूमनेवाले तकुओंके कारण अुनमें बट चढ़ता है। ट्रेवलर तथा कातनेवाली रिंगके जरिये सूत अपने-आप लपेटा जाता है। तकुअे प्रति मिनट ७,००० से ९,००० चक्कर लगाते हैं। तकुओंके चक्करोंका यह घटना-बढ़ना मुख्य चक्रके चक्करोंकी संख्या पर आधार रखता है। यह चक्र सूतकी मालोंसे तकुओंके साथ जुड़ा होता है। कटी लकीरोंवाले तकुओंकी अेक लकीरसे मालको निकाल कर दूसरी लकीरमें लगानेसे और कातनेके लिअे काममें ली जानेवाली नलीदार पूनियोंके मोटेपनमें फेरबदल करनेसे सूतके नंबरमें परिवर्तन किया जा सकता है।

२१. मौजूदा अंबर चरखे पर १२ से ४० नंबर तकका सूत काता जा सकता है। हालांकि ४० से ज्यादा नंबरका सूत भी काता जा सकता है, परंतु अिसका आधार रूअीकी किस्म और अुससे बनी पूनियों पर होता है। सच पूछा जाय तो अिस चरखे पर प्रयोगके तौर पर १३० नम्बरका सूत भी काता गया है। अुस पर अूंचे नंबरका सूत काता जरूर गया है, लेकिन अुसका मुख्य ध्येय मोटा और मध्यम श्रेणीका सूत कातनेका है। नीचेके कोष्ठकमें दिये गये कताअीके आंकड़े अंबर चरखेमें रही शक्तिको बताते हैं:

कताअीके तथ्य

रूअी	घंटे	नंबर	गुंडी	विशेष
सूरती	६	१९	२४	केवल कताअी
"	८	१९	१२	रूअीसे कताअी तक
जरीला	१०	२३	२५	केवल कताअी
"	२–१०	२१.५	१२	"
रोसिया	८–३०	१३.३	२२.५	"

अूपरके प्रत्येक अुदाहरणमें सूत अुतारनेका काम अलग किया गया, फिर भी कामके प्रतिदिनके हिसाबसे अुत्पादन, अूपर बताये मुताबिक, सूतकी २० गुड्डियोंसे काफी आगे बढ़ गया। अंबर चरखेका औसत अुत्पादन आठ घंटेके दिनमें रूअीसे लेकर सूत-कताअी तककी क्रियाओंके साथ ८ गुंडी और केवल कताअी की जाय तो १६ गुंडी होता है। प्रत्येक अुदाहरणमें सूत अुतारनेका समय अलग है।

२२. मौजूदा अम्बर चरखा यांत्रिक रचनामें सादा है और ट्रेवलरको छोड़कर अुसके सारे हिस्से या तो हर जगह मिल सकते हैं या बनाये जा सकते हैं। अुसे बनानेका अनुभव बताता है कि थोड़ी प्रारंभिक तालीमके बाद गांवके सुतार सारे भागोंको जोड़कर यह चरखा तैयार कर सकते हैं और बिगड़ने पर अच्छी तरह अुसे सुधार सकते हैं। लकड़ीका चौखटा आसानीसे अेक निश्चित नापका बनाया जा सकता है, जब कि लोहे और रबरके हिस्सोंको फैक्टरियोंमें बनानेकी जरूरत होगी। बदले जा सकनेवाले अिन हिस्सोंको बड़े पैमाने पर बनानेकी और अिन हिस्सोंको जोड़ कर चरखा तैयार करनेवाले देशके विभिन्न केन्द्रोंमें अुन्हें बांटनेकी व्यवस्था की जा चुकी है। आज अम्बर चरखेकी कीमत ६० रुपये कूती गअी है।

(अंग्रेजीसे)

(चालू)

www.vinoba.in

आन्ध्रमें विनोबा

जबसे तेलंगानामें प्रवेश हुआ है, अैसा लगता है मानो मंदिरके प्रांगणमें प्रवेश हुआ है। और नलगोंडा जिला यानी मंदिरका मुख्य हिस्सा। अिसी जिलेमें ५ साल पहिले पोचमपल्लीमें प्रथम दान मिला था। अिस जिलेमें देहात-देहातमें बुझी हुअी अग्नि और जुड़े हुअे हृदयोंकी निशानी दिखाअी देती है। वैदिकोंके पाठमें से अेक मंत्र लेकर विनोबाजीने भाष्य शुरू किया, "ऋषि कहता है, 'अेतावान् अस्य महिमा अतो जायांश्च पूरुषः' — यह सारी सृष्टि जमीन, वृक्ष, पर्वत अीश्वरकी महिमा है। अुसके लिअे तो अुनका महत्त्व है ही, परंतु चेतन पुरुषका अुससे भी अधिक महत्त्व है। जड़के मोहमें पड़कर चेतनकी विस्मृति होगी तो हम खुद जड़ बनेंगे। अिसलिअे जड़ संपत्तिका मोह छोड़ो, चेतन मानवका प्रेम संपादन करो। भूदान और संपत्ति-दान देकर भूमिहीनोंका हृदय जीत लो।"

अभी तक काफी लंबी राह तय करनी थी। मुकाम दूर था, परंतु रास्तेमें मिलनेवाली देहाती जनताका अुत्साह विनोबाजीके पैरोंकी गतिको रोकता था। हर घरके सामने लीपी हुअी जमीन पर अल्पना और दीपक सजाये गये थे। रास्ते पर फूलोंकी वर्षा हो रही थी व अखंड रामनामका जप हो रहा था। पेघनमेड़ा गांव आया। दान देनेवाले गांवके १२० घरके लोगोंने भूदान और संपत्ति-दानमें अपने जिगरका टुकड़ा अर्पण किया था। अेक-अेक सामने आ रहा था। दान-पत्र दे रहा था। विनोबाजी अपने गांवमें रुक सकें अिसलिअे दान-पत्रोंका ढेर लगाकर रास्ता रोका गया था। जिनके पास दान देने लायक भौतिक चीज नहीं थी अुन्होंने श्रम-दान जैसी सबसे अधिक मूल्यवान् वस्तु दान देंगे यह वचन विनोबाजीको दिया।

येरजुड़ा पड़ाव आया। जमींदारके आलीशान महलके भग्नावशेषमें निवास था। वह महल तूफान या बारिशसे नहीं गिरा था। प्रक्षुब्ध जनताके प्रहारोंसे गिराया हुआ, जला हुआ वह महल था। विनोबाजीके लिअे आज फूलोंसे और पत्तोंसे सजाया हुआ वह घर, सजायी हुअी लाशकी तरह दीखता था। खंडहर बनी हुअी, जली हुअी, भयानक दीवारें मानों पूछ रही थीं कि क्या अभी भी देश जगा नहीं है?

यह घर कम्युनिस्टोंने लूटा है, यह मैंने जापानी भाअीको कहा। अुन्होंने जवाब दिया, "कम्युनिस्टोंका नाम क्यों लेना, जहां अितनी भयंकर विषमता है वहां यह होना स्वाभाविक है।"

७ साल पहले कम्युनिस्टोंके नेतृत्वमें लोगोंने घरको लूटा तबसे अुसके मालिकने बिछाना छोड़ा नहीं। १५,००० अेकड़का वह मालिक मजदूरोंके साथ सुबहसे रात तक खेतमें मेहनत करता था। ७०० अेकड़के बागमें आम और नारंगीकी पैदावार करना यह अेक अुसकी तमन्ना थी। परंतु अिस समाज-रचनामें जो बड़ा हुआ है वह महाभयंकर रोग-जंतुसे दूषित है, अिसकी कल्पना अुसे नहीं थी। यह बाग जब तुम्हारा नहीं रहेगा, सबका होगा, तभी वह फूलेगा। अिस तरह अुसे किसीने समझाया नहीं था।

जमींदारके घरके लोग हैदराबादमें रहते हैं। आज विनोबाजीके लिअे वे यहां आये थे। अुनकी पत्नीने २०० अेकड़का दान दिया, परंतु पहले जैसी जमीन अब अुनके पास नहीं थी और दान छठे हिस्सेसे कम था। "आप प्रसन्न चित्तसे दे रही हैं न? तभी मैं लूंगा।" यह विनोबाजीने कहा तब अुसने कहा, "मैं आनन्दसे दे रही हूं।" विनोबाजीने फिरसे कहा, "यह तो पहला कदम है। मैं फिरसे मांगने आअूंगा।" "अवश्य", कहकर जब अुसने जमीन पर लगाअी हुअी दृष्टि अूपर की और रात्रिके अंधेरेमें भयानक रूपसे हंसनेवाली जली हुअी दीवारों, टूटे हुअे दरवाजों और कल ही बनाये हुअे घासके छप्पर पर दृष्टि डाली तो अेक दुःखद श्वास लिया।

नलगोंडा जिलेमें जो जागृति दिखाअी दे रही है वह और कहीं नहीं दिखाअी दी। देहातके अशिक्षित लोग सभामें अुठकर कोरिया और चीनके बारेमें सवाल पूछते हैं। तेलंगानामें निर्भयतासे सवाल पूछनेवाली स्त्रियोंकी प्रशंसा विनोबाजी हमेशा करते हैं, जहां सभामें स्त्रियोंकी संख्या पुरुषोंके बराबर ही होती है। अुत्तर-प्रदेश और बिहारमें परदेका रिवाज होनेके कारण सभामें स्त्रियां कभी नहीं दीखती थीं। परंतु अिधर व्यवस्थित कपड़े पहनकर और गोदीमें बच्चोंको लेकर स्त्रियोंका समुदाय रोज दीखता है।

नलगोंडा जिलेमें पिछली बार जो अिलेक्शन हुआ, अुसमें १४ जगहें कम्युनिस्टोंने जीत ली थीं। परंतु कुछ सालके बाद ही जो बाय-अिलेक्शन हुआ अुसमें कांग्रेसका जोर हो गया। अुस समय कम्युनिस्ट नेताओंको देहातके अशिक्षित लोग सवाल पूछकर बेजार करते थे, "आपके पास कितनी जमीन है? आपने भूदानमें कितनी जमीन दी है? भूदान पर आपका विश्वास नहीं, तो आपने स्वतंत्र रूपसे कितनी जमीन बांटी है? असेम्बलीमें जाकर आपने दूसरोंसे अलग और विशेष क्या काम किया?" यहां पर जो जागृति हुअी है, अुसका श्रेय बहुत कुछ कम्युनिस्टोंको है। विनोबाजीने जाहिर सभामें अुनकी तारीफ करते हुअे कहा, "कम्युनिस्ट बहादुर लोग हैं। अुन्होंने अत्याचार किया परंतु अुसके पीछे अेक विचार था। परंतु अब अुनमें परिवर्तन हो रहा है। जागतिक परिस्थिति ही अैसी बन रही है कि आज सबका हिंसा पर विश्वास नहीं हो रहा है। परंतु अहिंसा पर श्रद्धा बैठी नहीं है। हम सब भूदान द्वारा भूमि-समस्या अहिंसक रीतिसे हल करके दिखायेंगे तब अहिंसा पर श्रद्धा निर्माण होगी। अिसलिअे मैं कम्युनिस्टोंको आवाहन कर रहा हूं। वे लोग विश्व-शांतिकी भाषा बोलते हैं। लेकिन अगर शांतिकी शक्ति निर्माण करनेवाले कार्यमें वे सहयोग नहीं देंगे तो अपराधी साबित होंगे।"

नलगोंडा जिलेमें आज तक ८,००० अेकड़ जमीनका वितरण हुआ है। और अभी आधी जमीनका वितरण बाकी है। वितरणके कारण लोगोंमें आशा पैदा हुअी है। विनोबाजी कहते हैं, "आशाके लायक काम करना होगा। हमारे गांवमें कोअी भूमिहीन नहीं रहेगा, अैसी प्रतिज्ञा करके अुसे पूरी करनेके काममें लगना चाहिये।"

पड़ाव येरुकुलापाडू — निर्मला देशपांडे

२३-१-'५६

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

[तीसरी आवृत्ति]

लेखक: जुगतराम दवे; अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

सर्वोदय

लेखक: गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

कीमत २-८-० डाकखर्च ०-१२-०

अहिंसक समाजवादकी ओर

लेखक: गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

कीमत २-०-० डाकखर्च ०-१२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

अेक नया जातिवाद

हमारे शासक और शासन करनेवाली पार्टी दोनों पार्लमेन्टमें और सार्वजनिक सभाओंमें जातिवादकी निन्दा करते कभी थकते नहीं, लेकिन साथ ही साथ वे आय और दरजे पर आधारित अेक अधिक बुरे और हानिकारक जातिवादको जन्म दे रहे हैं। अिस नये प्रकारके जातिवादके तीन वर्ण हैं: मंत्रीगण जिनमें पार्लमेन्टके सदस्य शामिल हैं, अुच्च सरकारी अधिकारी तथा निचली श्रेणीके कारकून और सहायक लोग। बेशक, जनताका विशाल आधार है, लेकिन अुसकी कोअी परवाह नहीं करते; अुसका विचार केवल तभी किया जाता है, जब चुनाव नजदीक आते हैं। मोटे तौर पर आयकी दृष्टिसे, ये वर्ग क्रमशः ५,००० रुपये, ५०० रुपये और ५० रुपयेवाले हैं। बेशक, अिनमें कअी छोटी जातियां और अुपजातियां हैं, जिनका आधार आय और दरजेके अधिक बारीक भेदों पर है। ये समूह आपसमें मिलते-जुलते नहीं, और वास्तवमें अपने आसपास अैसी दीवालें और बाड़ें खड़ी कर लेते हैं जो सारे मानव व्यवहारको रोक देती हैं। अिस अलगाव और बाड़ेबन्दीको तड़क-तड़क और प्रतिष्ठा प्रदान करनेवाली नौकरशाहीकी सारी सामग्री मौजूद होती है, जैसे चपरासी और पहुंचके परे भीतरी अेकान्त स्थान वगैरा।

यह आश्चर्यकी बात है कि ८ या ९ सालके थोड़ेसे अर्सेमें हमने अेक अैसी जाति पैदा कर दी है, जो भारतमें अंग्रेजोंके बदनाम अलगावसे ज्यादा बुरी और निन्दनीय है, और अिस नअी जातिके साथ अंग्रेजोंके अलगावकी निष्पक्षताका कोअी लाभ जुड़ा हुआ नहीं है। नअी दिल्ली या किसी राज्यकी राजधानीका निष्पक्ष निरीक्षक अिस बातका समर्थन करेगा। नअी दिल्लीमें अैसे रेस्टॉरेन्ट हैं जहां केवल अेक वर्गके लोग ही जा सकते हैं, दूसरोंके लिअे वहां जाना शानके खिलाफ माना जाता है। अेक मंत्रीके बंगलेसे लेकर सेक्रेटरियोंके मकानों तक सब जगह और समाजके सारे स्तरों पर यही दुःखद मनोवृत्ति देखनेमें आती है। अुन्हें अपनी अूंची जाति और अूंचे दर्जेकी गरीब ब्राह्मणोंसे कहीं ज्यादा चिन्ता होती है। ब्राह्मण कमसे कम विवाह या दूसरी अैसी विधियोंके मौके पर तो गरीबके घर जरूर जायगा, लेकिन मंत्री महोदय कभी नहीं जायंगे, सिवाय कि वहां जानेसे अुन्हें किसी तरहकी प्रसिद्धि मिले।

अेक वर्ष पहले शासक पार्टीने समाजवादी स्वरूपकी समाज-रचनाका सिद्धान्त घोषित किया था। अुसका निश्चित अर्थ क्या है, यह कोअी नहीं जानता; लेकिन जनताके मन पर अैसी छाप है कि अुसका मतलब कमसे कम अधिक सामाजिक और आर्थिक समानता जरूर है। लेकिन अिस थोड़े अर्सेमें हमारे शासकों और शासक पार्टीकी मनोवृत्तिमें अैसा कोअी परिवर्तन नहीं दिखाअी दिया, जो यह बताये कि वे सचमुच समाजवादी स्वरूपकी समाज-रचनामें विश्वास रखते हैं। महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण बन रहे हैं और कम महत्त्वपूर्ण, छोटे, लोगोंकी तरफ किसीका ध्यान ही नहीं जाता। लेकिन समाजवादी समाज-व्यवस्था तब तक कायम नहीं हो सकती, जब तक कि शासन करनेवाली पार्टीकी मनोवृत्तिमें तेजीसे परिवर्तन न हो। बेशक, मंचों पर दिये जानेवाले भाषणों और अुपदेशोंसे वह कभी कायम नहीं की जा सकती। अुसकी स्थापना तभी होगी, जब सेवाको अधिक महत्त्व और खुशामदसे फूलनेवाले अहंको कम महत्त्व देकर जीवनके मूल्योंमें परिवर्तन किया जायगा।

हमारे शासक वर्गका व्यवहार हमारे सार्वजनिक सेवकों और अुच्च सरकारी अधिकारियोंके व्यवहारको भी बिगाड़ रहा है। अुनका यह विश्वास हो गया है कि परिश्रमपूर्वक और ओमानदारीसे काम करनेके बनिस्बत अपने वरिष्ठ अधिकारियोंकी खुशामद करने और अुनके आगे-पीछे घूमते रहनेसे हमें ज्यादा आसानीसे तरक्की और कामयाबी मिल सकती है। अिसका परिणाम यह हुआ है कि सरकारी नौकर बड़े अधिकारियों पर ज्यादा ध्यान देते हैं और अुन्हींका खयाल रखते हैं, जब कि जनताकी अगर पूरी अुपेक्षा नहीं की जाती तब भी अुसकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। अिससे जनताको नुकसान अुठाना पड़ता है। हमारी राज्य-संस्थामें कहीं कोअी बड़ी गलती पैठी हुअी है; अब समय आ गया है जब हमें अुसकी बुराअियों पर गहरा विचार करना चाहिये और निरर्थक वचनों द्वारा लोगोंको मूर्ख बनानेका प्रयत्न नहीं करना चाहिये।

हमारी मानी हुअी श्रेष्ठता और हमारे शासकोंके अलगावका अेक सबसे बुरा पहलू यह है कि शासकों, सरकारी नौकरों और जनताके बीच सहयोगकी भावनाका विकास नहीं हो सका है। और निचली श्रेणीके सरकारी नौकर भी शासकोंकी अलगावकी मनोवृत्ति तथा मानवतापूर्ण व्यवहारके अभावके कारण अुनके साथ अेकरूप नहीं हो पाये हैं। यही कारण है कि सरकारी नौकरोंमें शासकोंकी नीतियों और योजनाओंके लिअे अुत्साह नहीं है। जनता भी अैसे किसी अुत्साहसे अछूती रही है, और जनसाधारण हर जगह फैले हुअे कुशासन और भ्रष्टाचारकी टीका करता है और चिढ़ा हुआ है, जिसकी तरफ अूंचे पदों पर बैठे हुअे लोग गंभीर ध्यान देते दिखाअी नहीं देते और जनताकी किसी भी टीकामें विश्वास नहीं करते। अगर मंत्रीगण और दूसरे अुच्च-अधिकारी भेष बदल कर सामान्य जन शासनके बारेमें अपनी असावधानीके क्षणोंमें जो कुछ कहता है अुसे सुन सकें, तो वे यह महसूस कर लेंगे कि भारतमें आज कैसा कुशासन चल रहा है।

[स्पष्ट कारणोंसे लेखकने अपना नाम न देना ही पसन्द किया है। यह नअी दिल्लीसे लिखा गया है, जहां लेखक सरकारकी नौकरी कर रहे हैं और जिन बातोंके बारेमें लिखते हैं अुनका नजदीकसे निरीक्षण कर सकते हैं। अैसी दलील की जा सकती है कि यह अतिशयोक्ति भरा है; अिसमें बातोंको जितनी बुरी बताया गया है अुतनी बुरी वे हैं नहीं। बुराअीकी हदके प्रश्न पर हम नहीं झगड़ेंगे। कुछ लोग अिसके आदरणीय अपवाद भी हो सकते हैं। लेकिन अगर यह बुराअी लेखक द्वारा वर्णन किये ढंग पर बिलकुल प्रारंभिक अवस्थामें भी अनुभव की जा रही हो, तो यह अच्छा होगा कि अपनी राज्य-संस्थामें पैठ रही अिस गंभीर बीमारीके बारेमें हम सब सावधान और जाग्रत रहें।

३-१-'५६
(अंग्रेजीसे)

— म० प्र०]

विषय-सूची

		पृष्ठ
'हे नम्रताके सागर!'	गांधीजी	३९३
बड़ोदा युनिवर्सिटी	मगनभाई देसाई	३९३
तामिलनाड़के स्कूलोंमें हिन्दी	अेस० आर० शास्त्री	३९४
पुनर्निर्माणके पथ पर — १	अ० वा० सहस्रबुद्धे	३९४
अनेक-भाषी राज्यरचना और अेकता	मगनभाई देसाई	३९६
अम्बर चरखा क्या है ? — २		३९७
आन्ध्रमें विनोबा	निर्मला देशपांडे	३९९
अेक नया जातिवाद		४००
टिप्पणियां :		
भूदानके बारेमें प्रधानमंत्री		३९६
'बी० सी० जी० दिवस' की जिद	च० राजगोपालाचार्य	३९७

www.vinoba.in